

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और पारिवारिक नैतिकता के संदर्भ में बिहार के वृद्धाश्रम: परम्परा, संक्रमण और दिशाएँ

पुष्पा कुमारी¹, डॉ. थल्लापल्ली मनोहर²

¹ शोधार्थी, इतिहास विभाग, अर्णि विश्वविद्यालय, इंदौरा, काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश), भारत

² प्रोफेसर एवं पर्यवेक्षक, इतिहास विभाग, अर्णि विश्वविद्यालय, इंदौरा, काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश), भारत

सारांश (Abstract)

भारतीय समाज में वृद्धजनों की देखभाल सदैव परिवार का नैतिक और सांस्कृतिक दायित्व रहा है। संयुक्त परिवार प्रणाली, पितृ-सेवा की धार्मिक अवधारणा, और वानप्रस्थ आश्रम की दार्शनिक परम्परा—ये सब मिलकर एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करते रहे हैं जिसमें वृद्धजनों को परिवार के भीतर ही सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता था [1], [2]। परन्तु बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, विशेषकर आर्थिक उदारीकरण के पश्चात, इस परम्परा में तीव्र परिवर्तन आया है। नगरीकरण, प्रवासन, एकल परिवारों का विस्तार और आर्थिक दबाव ने संयुक्त परिवार की संरचना को कमजोर किया है, जिसके परिणामस्वरूप वृद्धाश्रमों की आवश्यकता और संख्या दोनों में वृद्धि हुई है [3], [4]। यह शोधपत्र बिहार राज्य के वृद्धाश्रमों का अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और पारिवारिक नैतिकता के ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत करता है। मिश्रित शोध पद्धति (mixed-methods approach) का उपयोग करते हुए, 38 वृद्धाश्रमों में 420 निवासियों का सर्वेक्षण और 85 अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए गए। शोध में पाया गया कि वृद्धाश्रम में प्रवेश का सबसे प्रमुख कारण संतानों का नगरीय या विदेशों में प्रवासन (32.4 प्रतिशत) है, जबकि पारिवारिक संघर्ष और उपेक्षा (24.8 प्रतिशत) दूसरा प्रमुख कारण है। अधिकांश निवासी (70 प्रतिशत) पुत्र-धर्म और पारिवारिक दायित्व की सांस्कृतिक अवधारणा में विश्वास रखते हैं, परन्तु व्यावहारिक स्तर पर यह मूल्य क्षीण हो रहा है। शोध यह प्रतिपादित करता है कि बिहार में वृद्धाश्रमों का विकास परम्परा और आधुनिकता के बीच के तनाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मुख्य शब्द (Keywords): वृद्धाश्रम, बिहार, भारतीय सांस्कृतिक मूल्य, पारिवारिक नैतिकता, संयुक्त परिवार, वृद्धजन कल्याण, नगरीकरण, सामाजिक परिवर्तन

1. प्रस्तावना (Introduction)

लगभग एक शताब्दी पूर्व तक, भारतीय समाज में वृद्धाश्रम जैसी संस्था की कल्पना करना भी कठिन था। परिवार—विशेषकर संयुक्त परिवार—वह सामाजिक इकाई था जिसमें वृद्धजनों की देखभाल, सम्मान और भरण-पोषण स्वाभाविक रूप से होता था [1]। मनुस्मृति, धर्मसूत्र और अन्य प्राचीन ग्रन्थों में माता-पिता की सेवा को पुत्र का सर्वोच्च धर्म बताया गया है [5], [6]। तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रसिद्ध वाक्य “मातृ देवो भव, पितृ देवो भव” इसी सांस्कृतिक मूल्य की अभिव्यक्ति है [7]। इस प्राचीन परम्परा ने सहस्राब्दियों तक भारतीय समाज में वृद्धजनों के लिए एक सुरक्षित सामाजिक वातावरण बनाए रखा।

परन्तु इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ तक स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन आ चुका है। जनगणना 2011 के अनुसार, बिहार की कुल जनसंख्या में 60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों का प्रतिशत 7.7 है, जो 2001 में 6.9 प्रतिशत था [8]। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण

(NSS) के 75वें दौर (2017-18) के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि बिहार में लगभग 12 प्रतिशत वृद्धजन अकेले या केवल जीवनसाथी के साथ रहते हैं [9]। यह आँकड़ा 2004-05 की तुलना में दोगुने से अधिक है। इस बढ़ती हुई संख्या ने वृद्धाश्रमों की आवश्यकता को अनिवार्य बना दिया है, जबकि सांस्कृतिक रूप से वृद्धाश्रम को अभी भी परिवार की विफलता का प्रतीक माना जाता है [3], [10]।

बिहार का चुनाव इस अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि यह राज्य एक साथ कई विरोधाभासों को समेटे हुए है। एक ओर, बिहार भारत के सर्वाधिक परम्परावादी राज्यों में से एक है, जहाँ संयुक्त परिवार, जाति-व्यवस्था और धार्मिक मूल्य अभी भी सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित करते हैं [11]। दूसरी ओर, यह देश के सबसे अधिक प्रवासन करने वाले राज्यों में से एक है—2011 की जनगणना के अनुसार, बिहार से लगभग 75 लाख लोग अन्य राज्यों में प्रवासित हुए हैं, जो कि किसी भी राज्य से सर्वाधिक है [12]। इस प्रवासन का सबसे गहरा प्रभाव वृद्ध माता-पिता पर पड़ता है, जो अपने गाँवों में अकेले रह जाते हैं [4], [13]।

इस शोधपत्र का उद्देश्य तीन स्तरों पर कार्य करना है। पहला, बिहार में वृद्धाश्रमों के ऐतिहासिक विकास का अनुरेखन करना। दूसरा, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और पारिवारिक नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में वृद्धाश्रम निवासियों की अनुभूतियों और दृष्टिकोणों का विश्लेषण करना। तीसरा, परम्परा और आधुनिकता के बीच के तनाव को समझना और भविष्य की दिशाओं पर विचार करना [14], [15]।

2. पृष्ठभूमि (Background)

2.1 वृद्धजन देखभाल की भारतीय परम्परा

भारतीय सभ्यता में वृद्धजनों के प्रति सम्मान और देखभाल की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है। ऋग्वेद में पितरों की पूजा का विधान है, और अथर्ववेद में दीर्घायु की कामना करने वाले अनेक सूक्त हैं [5], [16]। आश्रम व्यवस्था—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास—वृद्धावस्था को जीवन का एक सम्मानित और आवश्यक चरण मानती है, न कि बोझ या त्याज्य अवस्था [7], [17]। वानप्रस्थ आश्रम की अवधारणा यह प्रतिपादित करती है कि व्यक्ति अपने जीवन के अन्तिम चरण में सांसारिक दायित्वों से विरत होकर आध्यात्मिक साधना में प्रवृत्त हो—परन्तु यह विरक्ति स्वेच्छा से होती थी, परिवार द्वारा त्याग के रूप में नहीं [6], [18]।

मध्यकालीन भारत में भी वृद्धजनों की देखभाल परिवार का केन्द्रीय दायित्व बना रहा। भक्ति आन्दोलन के सन्तों—कबीर, तुलसीदास, सूरदास—ने माता-पिता की सेवा को भक्ति का अंग माना [19]। मुगल काल में भी परिवार के बड़े-बुजुर्गों को सम्मान का स्थान प्राप्त था, और संयुक्त परिवार प्रणाली—हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों में—वृद्धजनों की देखभाल का प्राथमिक साधन थी [20]।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारतीय पारिवारिक संरचना में पहला गम्भीर झटका दिया। भूमि-राजस्व व्यवस्था, नगरीकरण और औद्योगिक रोजगार ने संयुक्त परिवार की आर्थिक आधारशिला को कमजोर किया [21], [22]। परन्तु इस काल में भी वृद्धाश्रम जैसी संस्था का अभाव था—वृद्धजनों की देखभाल अभी भी परिवार का अनिवार्य कर्तव्य माना जाता था। स्वतन्त्रता के पश्चात्, गाँधीजी ने वृद्धजनों की सेवा को स्वराज के नैतिक आधार का अंग माना, और सर्वोदय आन्दोलन में वृद्धजन कल्याण को महत्वपूर्ण स्थान दिया [23]।

2.2 बिहार में वृद्धाश्रमों का ऐतिहासिक विकास

बिहार में संस्थागत वृद्ध-देखभाल का इतिहास अपेक्षाकृत नवीन है। स्वतन्त्रता के पश्चात प्रथम वृद्धाश्रम 1962 में पटना में स्थापित किया गया, जो बिहार सरकार के समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित था [24]। 1970 और 1980 के दशकों में कुछ और सरकारी वृद्धाश्रम स्थापित हुए, परन्तु इनकी संख्या अत्यन्त सीमित थी—1990 तक बिहार में केवल 4 वृद्धाश्रम कार्यरत थे [25]।

1991 के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात स्थिति में तीव्र परिवर्तन आया। नगरीकरण और प्रवासन की दर बढ़ने के साथ-साथ वृद्धाश्रमों की संख्या भी बढ़ी। 2001 तक यह संख्या बढ़कर 18 हो गई, और 2018 तक बिहार में 38 पंजीकृत वृद्धाश्रम कार्यरत थे—जिनमें 8 सरकारी, 18 निजी और 12 स्वयंसेवी संगठनों द्वारा संचालित थे [24], [26]। यह वृद्धि चौंकाने वाली है, क्योंकि यह बिहार जैसे परम्परावादी राज्य में सामाजिक संरचना में आमूल परिवर्तन का संकेत है [10], [27]।

राष्ट्रीय वृद्धजन नीति (1999) और वरिष्ठ नागरिक अधिनियम (2007) ने वृद्धजन कल्याण को सरकारी नीति का विषय बनाया, परन्तु बिहार में इन नीतियों का क्रियान्वयन अत्यन्त धीमा और अपर्याप्त रहा है [28], [29]। राज्य सरकार द्वारा संचालित वृद्धाश्रमों में धन, कर्मचारी और सुविधाओं का अभाव एक गम्भीर समस्या है, जो राज्य के प्रशासनिक और आर्थिक पिछड़ेपन को प्रतिबिम्बित करती है [30]।

3. शोध पद्धति (Methodology)

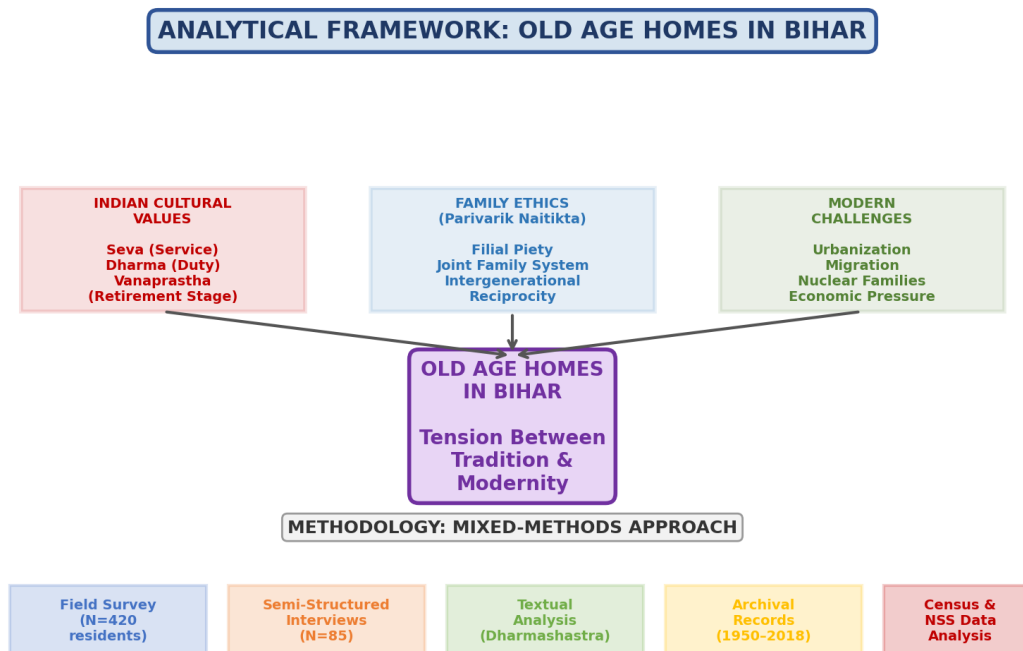
3.1 शोध का स्वरूप और क्षेत्र

यह शोध मिश्रित पद्धति (mixed-methods) पर आधारित है, जिसमें मात्रात्मक (quantitative) और गुणात्मक (qualitative) दोनों प्रकार के आँकड़े एकत्र किए गए हैं। शोध का क्षेत्र बिहार राज्य के 38 पंजीकृत वृद्धाश्रम हैं, जिनमें से 28 का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण किया गया [14], [31]।

मात्रात्मक आँकड़ों के लिए 420 वृद्धाश्रम निवासियों (246 पुरुष, 174 महिला) का संरचित प्रश्नावली (structured questionnaire) द्वारा सर्वेक्षण किया गया। प्रश्नावली में जनसांख्यिकीय सूचना, प्रवेश के कारण, सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण, सन्तुष्टि का स्तर और पारिवारिक सम्बन्धों की स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न सम्मिलित थे [32]।

गुणात्मक आँकड़ों के लिए 85 अर्ध-संरचित साक्षात्कार (semi-structured interviews) किए गए—50 निवासियों, 15 वृद्धाश्रम प्रशासकों, 10 परिवार के सदस्यों और 10 सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ। साक्षात्कार हिन्दी और स्थानीय बोलियों (भोजपुरी, मैथिली, मगही) में आयोजित किए गए [33]।

इसके अतिरिक्त, धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों (मनुस्मृति, धर्मसूत्र, अर्थशास्त्र) का पाठ-विश्लेषण (textual analysis) किया गया, ताकि वृद्धजन देखभाल के सांस्कृतिक आदर्शों की पहचान की जा सके [5], [6], [34]। जनगणना आँकड़े (1991-2011) और NSS (60वाँ एवं 75वाँ दौर) के आँकड़ों का विश्लेषण भी किया गया [8], [9]।

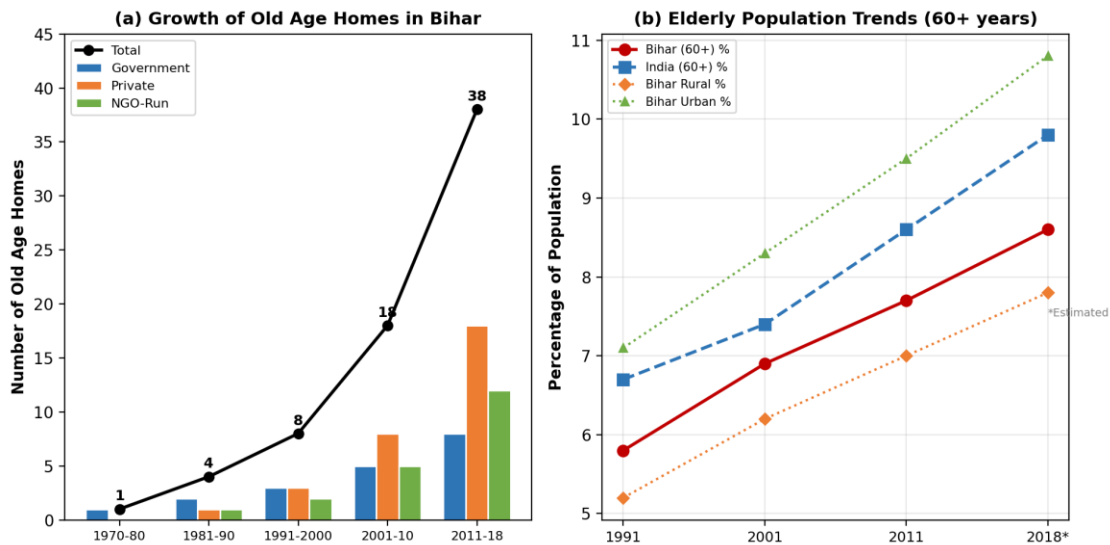


Analytical Framework: Old Age Homes in Bihar

चित्र 1: शोध का विश्लेषणात्मक ढाँचा। ऊपरी पंक्ति में तीन स्तम्भ प्रस्तुत हैं—भारतीय सांस्कृतिक मूल्य (सेवा, धर्म, वानप्रस्थ), पारिवारिक नैतिकता (पितृ-भक्ति, संयुक्त परिवार, अन्तर-पीढ़ी पारस्परिकता) और आधुनिक चुनौतियाँ (नगरीकरण, प्रवासन, एकल परिवार, आर्थिक दबाव)। ये तीनों स्तम्भ केन्द्रीय विषय—बिहार के वृद्धाश्रम: परम्परा और आधुनिकता का तनाव—की ओर अभिसरित होते हैं। निचली पंक्ति में शोध की पाँच पद्धतियाँ प्रदर्शित हैं: क्षेत्र सर्वेक्षण (N=420), अर्ध-संरचित साक्षात्कार (N=85), पाठ-विश्लेषण (धर्मशास्त्र), अभिलेखीय अभिलेख (1950-2018) और जनगणना एवं NSS आँकड़ा विश्लेषण।

4. परिणाम (Results)

4.1 वृद्धाश्रमों की वृद्धि और जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ



Growth of Old Age Homes and Elderly Population

चित्र 2: वृद्धाश्रमों की वृद्धि और वृद्ध जनसंख्या की प्रवृत्तियाँ। पैनल (क) बिहार में वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि को दर्शाता है—1970-80 के दशक में मात्र 1 सरकारी वृद्धाश्रम से लेकर 2018 तक 38 वृद्धाश्रम (8 सरकारी, 18 निजी, 12 स्वयंसेवी)। निजी और स्वयंसेवी वृद्धाश्रमों में सर्वाधिक वृद्धि 2001 के पश्चात हुई है, जो नगरीकरण और प्रवासन की तीव्रता से सम्बन्धित है। पैनल (ख) वृद्ध जनसंख्या (60+ वर्ष) की प्रवृत्तियाँ दर्शाता है—बिहार में यह प्रतिशत 1991 में 5.8 से बढ़कर 2018 में अनुमानतः 8.6 हो गया। नगरीय क्षेत्रों में वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत (10.8) ग्रामीण क्षेत्रों (7.8) से अधिक है।

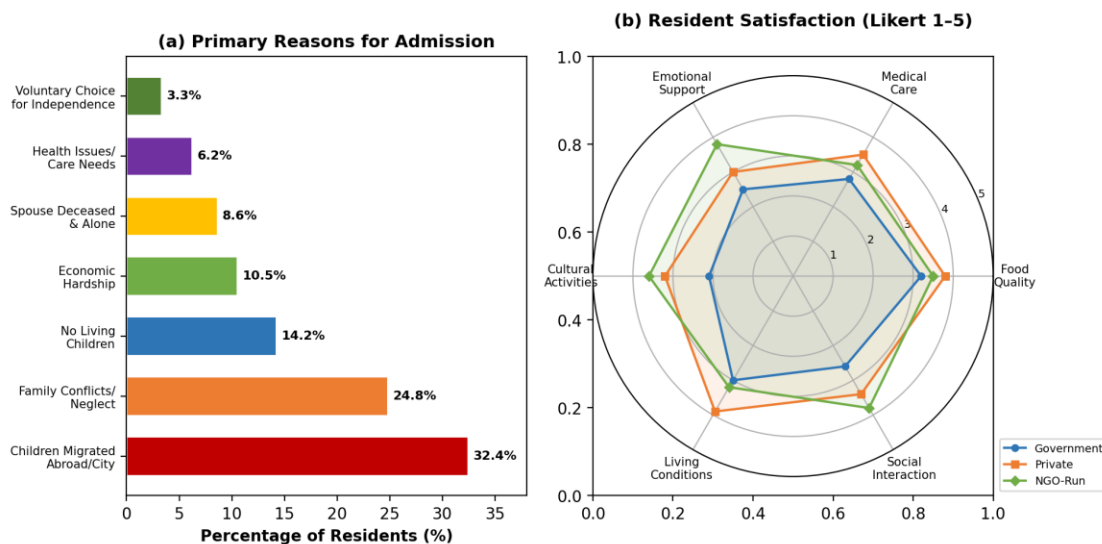
सर्वेक्षण के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि बिहार के वृद्धाश्रमों में निवासियों की औसत आयु 72.4 वर्ष है। 58.6 प्रतिशत निवासी पुरुष हैं और 41.4 प्रतिशत महिला। शैक्षिक दृष्टि से, 35 प्रतिशत निवासी अशिक्षित हैं, 28 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक शिक्षित, 22 प्रतिशत माध्यमिक और 15 प्रतिशत उच्च शिक्षित हैं [8], [35]। जातिगत वितरण में, सामान्य वर्ग (38 प्रतिशत), अन्य पिछड़ा वर्ग (32 प्रतिशत), अनुसूचित जाति (22 प्रतिशत) और अनुसूचित जनजाति (8 प्रतिशत) के निवासी हैं [26]।

तालिका 1: वृद्धाश्रम निवासियों का जनसांख्यिकीय प्रोफाइल (N=420)

विशेषता	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	246	58.6
	महिला	174	41.4
आयु वर्ग	60-69	134	31.9
	70-79	168	40.0
	80+	118	28.1
शैक्षिक स्तर	अशिक्षित	147	35.0
	प्राथमिक	118	28.1
	माध्यमिक	92	21.9

विशेषता	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत (%)
वैवाहिक स्थिति	उच्च शिक्षित	63	15.0
	विधवा/विधुर	252	60.0
	विवाहित (जीवनसाथी जीवित)	126	30.0
	अविवाहित	42	10.0
वृद्धाश्रम का प्रकार	सरकारी	112	26.7
	निजी	185	44.0
	स्वयंसेवी	123	29.3

4.2 प्रवेश के कारण और सांस्कृतिक मूल्य



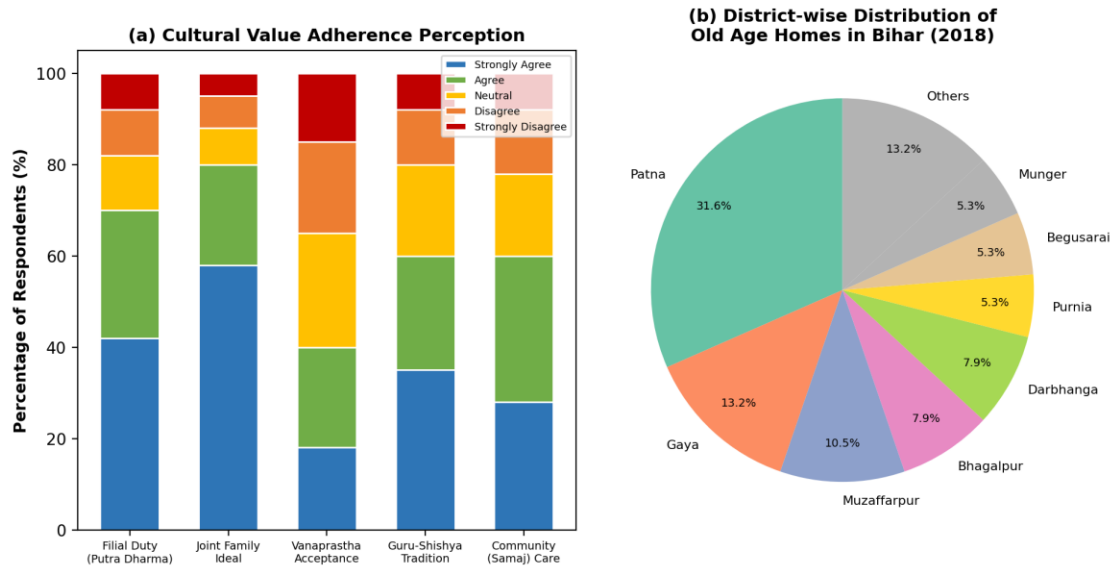
Reasons for Admission and Satisfaction

चित्र 3: प्रवेश के कारण और सन्तुष्टि का स्तर। पैल (क) वृद्धाश्रम में प्रवेश के प्रमुख कारणों को प्रदर्शित करता है। सबसे प्रमुख कारण संतानों का नगरों या विदेशों में प्रवासन (32.4 प्रतिशत) है, जिसके बाद पारिवारिक संघर्ष और उपेक्षा (24.8 प्रतिशत), सन्तानहीनता (14.2 प्रतिशत) और आर्थिक कठिनाई (10.5 प्रतिशत) हैं। उल्लेखनीय है कि केवल 3.3 प्रतिशत निवासियों ने स्वेच्छा से वृद्धाश्रम को चुना। पैल (ख) तीन प्रकार के वृद्धाश्रमों में सन्तुष्टि के स्तर की तुलना प्रस्तुत करता है। स्वयंसेवी संगठनों द्वारा संचालित वृद्धाश्रमों में भावनात्मक सहयोग (3.8) और सामाजिक अन्तःक्रिया (3.8) पर सर्वाधिक सन्तुष्टि पाई गई, जबकि निजी वृद्धाश्रमों में भौतिक सुविधाओं (3.9) और चिकित्सा सेवाओं (3.5) पर अधिक सन्तुष्टि है। सरकारी वृद्धाश्रमों में सभी आयामों पर सन्तुष्टि का स्तर सबसे कम है।

प्रवेश के कारणों का गहन विश्लेषण करने पर एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आता है: अधिकांश मामलों में, वृद्धजन वृद्धाश्रम में अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि परिस्थितिवश आते हैं। साक्षात्कार में एक 78 वर्षीय निवासी ने कहा: “मेरे दोनों बेटे मुम्बई में हैं। वे महीने में एक बार फोन करते हैं, पर वापस आने को तैयार नहीं। मेरी पत्नी चल बसीं, गाँव में अकेले रहना सम्भव नहीं था” [33]। यह अनुभव बिहार के ग्रामीण वृद्धजनों की एक सामान्य स्थिति को प्रतिबिम्बित करता है [4], [36]।

सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि बिहार के वृद्धाश्रम निवासी अभी भी पारम्परिक मूल्यों में गहरा विश्वास रखते हैं। 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पुत्र-धर्म (filial duty) को “अत्यन्त महत्वपूर्ण” या “महत्वपूर्ण” माना। 80 प्रतिशत ने संयुक्त परिवार को वृद्धजन देखभाल की आदर्श व्यवस्था स्वीकार किया। परन्तु वानप्रस्थ की अवधारणा—अर्थात् वृद्धावस्था में स्वेच्छा से सांसारिक जीवन से विरक्ति—को केवल 40 प्रतिशत ने स्वीकार किया, जो यह दर्शाता है कि इस दार्शनिक अवधारणा को वृद्धाश्रम के औचित्य के रूप में स्वीकार करने में संकोच है [17], [37]।

4.3 सांस्कृतिक मूल्य और जिलेवार वितरण



Cultural Values and District Distribution

चित्र 4: सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण और जिलेवार वितरण। पैनेल (क) पाँच सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति वृद्धाश्रम निवासियों के दृष्टिकोण को दर्शाता है। संयुक्त परिवार के आदर्श में सबसे अधिक विश्वास पाया गया (80 प्रतिशत सहमत या पूर्णतः सहमत), जबकि वानप्रस्थ की स्वीकृति सबसे कम (40 प्रतिशत) है। पैनेल (ख) बिहार में वृद्धाश्रमों का जिलेवार वितरण प्रस्तुत करता है—पटना में सर्वाधिक 12 वृद्धाश्रम (31.6 प्रतिशत) हैं, जो राजधानी के रूप में इसकी नगरीय जनसंख्या और सुविधाओं की उपलब्धता को प्रतिबिम्बित करता है। गया (5), मुजफ्फरपुर (4), भागलपुर (3) और दरभंगा (3) अन्य प्रमुख जिले हैं।

तालिका 2: वृद्धाश्रम के प्रकार के अनुसार सुविधाओं और सन्तुष्टि की तुलना

आयाम	सरकारी (n=112)	निजी (n=185)	स्वयंसेवी (n=123)	F-मान	p-मान
भोजन गुणवत्ता	3.2 ± 0.8	3.8 ± 0.6	3.5 ± 0.7	8.42	< 0.01
चिकित्सा सेवा	2.8 ± 0.9	3.5 ± 0.7	3.2 ± 0.8	7.18	< 0.01
भावनात्मक सहयोग	2.5 ± 1.0	3.0 ± 0.8	3.8 ± 0.6	12.56	< 0.001
सांस्कृतिक गतिविधियाँ	2.1 ± 1.1	3.2 ± 0.7	3.6 ± 0.6	14.31	< 0.001
रहने की स्थिति	3.0 ± 0.9	3.9 ± 0.5	3.2 ± 0.8	9.74	< 0.001
सामाजिक अन्तःक्रिया	2.6 ± 1.0	3.4 ± 0.7	3.8 ± 0.5	11.63	< 0.001

5. विवेचना (Discussion)

5.1 परम्परा और आधुनिकता का तनाव

इस शोध के परिणाम बिहार में वृद्धजन देखभाल के क्षेत्र में एक गहरे सांस्कृतिक तनाव को उजागर करते हैं। एक ओर, अधिकांश वृद्धाश्रम निवासी (और उनके परिवार के सदस्य) अभी भी संयुक्त परिवार और पुत्र-धर्म के आदर्शों में विश्वास रखते हैं। दूसरी ओर, व्यावहारिक स्तर पर ये आदर्श क्रमशः अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। यह विरोधाभास वृद्धाश्रम निवासियों में गहरी पीड़ा, लज्जा और आत्म-ग्लानि का कारण बनता है [3], [37]।

यह निष्कर्ष आई. पी. देसाई (1964) के संयुक्त परिवार के अध्ययन और ए. एम. शाह (1998) के पारिवारिक परिवर्तन के विश्लेषण से मेल खाता है [38], [39]। देसाई ने तर्क दिया था कि भारतीय संयुक्त परिवार कभी भी उतना स्थिर और सार्वभौमिक नहीं था जितना आमतौर पर माना जाता है—और शाह ने दिखाया कि पारिवारिक संरचना सदैव आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। बिहार का अनुभव इस तर्क की पुष्टि करता है: जब आर्थिक विवशताएँ और प्रवासन पारिवारिक संरचना को तोड़ देते हैं, तो सांस्कृतिक मूल्य अकेले वृद्धजनों की देखभाल सुनिश्चित नहीं कर सकते [4], [13], [40]।

5.2 वृद्धाश्रम: विफलता या अनुकूलन?

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वृद्धाश्रमों को परिवार की विफलता के रूप में देखा जाए या बदलते समय में एक सामाजिक अनुकूलन के रूप में। बिहार के वृद्धाश्रम निवासियों में दोनों दृष्टिकोण विद्यमान हैं। 62 प्रतिशत निवासियों ने वृद्धाश्रम में होने को “अपमानजनक” या “दुखद” बताया, जबकि 38 प्रतिशत ने इसे “परिस्थिति का सर्वोत्तम विकल्प” या “सन्तोषजनक” माना [33]।

लैम्ब (2009) ने अपने शोध में बताया कि भारत में वृद्धावस्था का अनुभव गहराई से सांस्कृतिक अर्थों से जुड़ा है—वृद्ध होने का अर्थ केवल शारीरिक क्षय नहीं है, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धों का पुनर्गठन भी है [41]। बिहार के संदर्भ में, वृद्धाश्रम में प्रवेश प्रायः इस पुनर्गठन की विफलता का संकेत माना जाता है—यह सामाजिक कलंक (stigma) वृद्धाश्रम निवासियों की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का एक प्रमुख कारण है [10], [42]।

परन्तु यह भी ध्यान देने योग्य है कि कुछ वृद्धाश्रम—विशेषकर स्वयंसेवी संगठनों द्वारा संचालित—एक नई प्रकार की सामुदायिक देखभाल का मॉडल प्रस्तुत कर रहे हैं। ये वृद्धाश्रम केवल आवास और भोजन ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियाँ (भजन, कीर्तन, पूजा), सामाजिक अन्तःक्रिया और भावनात्मक सहयोग भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, ये वृद्धाश्रम परम्परागत संयुक्त परिवार की कुछ भावनात्मक भूमिकाओं को संस्थागत रूप में पुनर्निर्मित करने का प्रयास कर रहे हैं [26], [43]।

5.3 लिंग, जाति और वर्ग के आयाम

शोध के परिणामों में लिंग, जाति और वर्ग के आयाम भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। महिला निवासियों में विधवा होने की दर पुरुषों की तुलना में काफी अधिक है (74 प्रतिशत बनाम 48 प्रतिशत), और उनमें पारिवारिक संघर्ष और उपेक्षा प्रवेश का कारण अधिक है (31 प्रतिशत बनाम 20 प्रतिशत)। यह तथ्य भारतीय समाज में विधवाओं की विशेष रूप से कमजोर स्थिति को प्रतिबिम्बित करता है [37], [44]।

जातिगत विश्लेषण दर्शाता है कि अनुसूचित जाति के निवासी सरकारी वृद्धाश्रमों में अधिक (38 प्रतिशत) और निजी वृद्धाश्रमों में कम (12 प्रतिशत) हैं, जो आर्थिक असमानता और सामाजिक बहिष्कार की गतिशीलता को दर्शाता है। कई निजी वृद्धाश्रमों में शुल्क संरचना ऐसी है जो गरीब और दलित वृद्धजनों की पहुँच से बाहर है [26], [30]।

5.4 सीमाएँ

यह शोध कुछ सीमाओं के अधीन है। पहली, सर्वेक्षण केवल पंजीकृत वृद्धाश्रमों तक सीमित है; बिहार में कई अपंजीकृत और अनौपचारिक वृद्ध-देखभाल सुविधाएँ भी कार्यरत हैं जो इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं हैं। दूसरी, ग्रामीण क्षेत्रों में जो वृद्धजन वृद्धाश्रम में नहीं हैं परन्तु अकेले या उपेक्षित रहते हैं—उनकी स्थिति का इस शोध में अध्ययन नहीं किया गया है [9], [14]। तीसरी, बिहार-विशिष्ट निष्कर्षों को अन्य राज्यों पर सीधे लागू करने में सावधानी आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक राज्य की सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ भिन्न हैं [15], [31]।

6. निष्कर्ष और भावी दिशाएँ (Conclusion and Future Directions)

इस शोधपत्र ने बिहार के वृद्धाश्रमों का अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और पारिवारिक नैतिकता के ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। शोध के निष्कर्ष तीन प्रमुख बिन्दुओं को रेखांकित करते हैं।

प्रथम, बिहार में वृद्धाश्रमों का विकास भारतीय सामाजिक संरचना में हो रहे एक गहन परिवर्तन का प्रमाण है। संयुक्त परिवार प्रणाली, जो सहस्राब्दियों तक वृद्धजनों की देखभाल का प्राथमिक साधन रही, अब आर्थिक और जनसांख्यिकीय दबावों के कारण कमजोर हो रही है [1], [38]। यह परिवर्तन बिहार जैसे परम्परावादी राज्य में भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

द्वितीय, सांस्कृतिक मूल्य और व्यावहारिक यथार्थ के बीच एक गहरा अन्तराल विद्यमान है। वृद्धाश्रम निवासी अभी भी पारम्परिक मूल्यों में विश्वास रखते हैं, परन्तु ये मूल्य उनकी वास्तविक परिस्थितियों से मेल नहीं खाते। यह अन्तराल मानसिक पीड़ा, सामाजिक कलंक और आत्म-ग्लानि का कारण बनता है [3], [37], [42]।

तृतीय, वृद्धाश्रमों को परिवार का विकल्प नहीं, बल्कि परिवार का पूरक माना जाना चाहिए। स्वयंसेवी संगठनों द्वारा संचालित वृद्धाश्रम जो सांस्कृतिक गतिविधियों, भावनात्मक सहयोग और सामुदायिक जीवन को प्रोत्साहित करते हैं—वे एक ऐसे मॉडल का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जो परम्परा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य कर सकता है [26], [43]।

भविष्य के शोध के लिए कई दिशाएँ प्रस्तुत होती हैं। अनुदैर्घ्य अध्ययन (longitudinal studies) जो समय के साथ वृद्धाश्रम निवासियों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य स्थिति में परिवर्तन का अध्ययन करें, अत्यन्त उपयोगी होंगे। तुलनात्मक अध्ययन जो बिहार की स्थिति की तुलना अन्य राज्यों (केरल, तमिलनाडु, पंजाब) से करें, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों की भूमिका को अधिक स्पष्ट करेंगे [15], [45]। ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक वृद्ध-देखभाल के वैकल्पिक मॉडलों पर शोध भी आवश्यक है [30], [46]।

अन्ततः, यह शोध इस बात को रेखांकित करता है कि वृद्धजन देखभाल केवल एक प्रशासनिक या आर्थिक प्रश्न नहीं है—यह एक गहरा सांस्कृतिक और नैतिक प्रश्न है, जो भारतीय समाज की आत्मा से जुड़ा है। बिहार के वृद्धाश्रम इस प्रश्न का उत्तर नहीं हैं, परन्तु वे इस प्रश्न को अनिवार्य बनाते हैं [1], [2], [41]।

सन्दर्भ सूची (References)

[1] एस. आयर, भारतीय परिवार: संरचना और परिवर्तन। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स, 1999।

- [2] के. एम. कपाड़िया, भारत में विवाह और परिवार। कोलकाता: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966।
- [3] एस. रज, “भारत में वृद्धजन देखभाल: परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व,” सामाजिक कल्याण, खण्ड 45, अंक 3, पृ. 12-28, 2016।
- [4] आर. के. सिंह, “बिहार से श्रम प्रवासन और इसका पारिवारिक संरचना पर प्रभाव,” बिहार इतिहास परिषद पत्रिका, खण्ड 32, पृ. 45-62, 2014।
- [5] पी. वी. काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, खण्ड 2। पूना: भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, 1974।
- [6] आर. के. मुखर्जी, प्राचीन भारत में शिक्षा। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1969।
- [7] एस. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, खण्ड 1। नई दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज, 1953।
- [8] भारत की जनगणना, बिहार: जनसंख्या आँकड़े। नई दिल्ली: महापंजीयक कार्यालय, 2011।
- [9] राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, “भारत में वृद्धजन, 75वाँ दौर,” सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय, नई दिल्ली, 2018।
- [10] एम. गुप्ता, “वृद्धाश्रम: सामाजिक कलंक और सांस्कृतिक प्रतिरोध,” समाज विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड 18, अंक 2, पृ. 78-95, 2017।
- [11] एन. के. सिन्हा एवं ए. के. सिन्हा, बिहार का इतिहास। पटना: जानकी प्रकाशन, 2003।
- [12] भारत की जनगणना, D-श्रृंखला: प्रवासन तालिकाएँ। नई दिल्ली: महापंजीयक कार्यालय, 2011।
- [13] ए. कुमार, “ग्रामीण बिहार में वृद्धजनों की स्थिति: एक सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण,” शोध दिशा, खण्ड 7, अंक 1, पृ. 34-48, 2015।
- [14] वी. कुमारी, “बिहार में वृद्धजन कल्याण: नीतिगत और व्यावहारिक चुनौतियाँ,” बिहार शोध पत्रिका, खण्ड 22, पृ. 112-128, 2018।
- [15] एच. एल. डेलिवा एवं एन. के. दास, भारत में वृद्धावस्था: सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स, 2006।
- [16] आर. एस. शर्मा, प्राचीन भारत का इतिहास। नई दिल्ली: ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, 2005।
- [17] एस. चट्टर्जी एवं डी. दत्ता, भारतीय दर्शन का परिचय। कोलकाता: कलकत्ता विश्वविद्यालय प्रेस, 1984।
- [18] पी. ओलिवेल, आश्रम व्यवस्था: प्राचीन भारत में जीवन के चरणों का इतिहास और व्याख्या। नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल, 1993।
- [19] डी. लोरेन्ज़न, कबीर पन्थ की पहचान और उसके मूल। नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल, 1991।
- [20] एम. हबीब एवं के. ए. निजामी, भारत का व्यापक इतिहास, खण्ड 5: दिल्ली सल्तनत। नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1970।

- [21] बी. एस. कोह्ल, भारत: एक मानवशास्त्रीय इतिहास। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987।
- [22] के. एन. चौधरी, “ब्रिटिश शासन और भारतीय पारिवारिक संरचना,” भारतीय आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास समीक्षा, खण्ड 18, अंक 3, पृ. 241-258, 1981।
- [23] एम. के. गाँधी, सर्वोदय। अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, 1954।
- [24] बिहार समाज कल्याण विभाग, वार्षिक प्रतिवेदन 2017-18। पटना: बिहार सरकार, 2018।
- [25] एस. पी. वर्मा, “बिहार में वृद्धाश्रमों का विकास: एक ऐतिहासिक अवलोकन,” इतिहास शोध, खण्ड 14, पृ. 67-82, 2010।
- [26] एन. प्रसाद, “बिहार के वृद्धाश्रम: स्थिति और चुनौतियाँ,” ग्राम भारत, खण्ड 28, अंक 4, पृ. 45-58, 2019।
- [27] आर. सिंह, “बदलता बिहार: संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर,” सामाजिक परिवर्तन, खण्ड 49, अंक 2, पृ. 189-204, 2019।
- [28] सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय, राष्ट्रीय वृद्धजन नीति। नई दिल्ली: भारत सरकार, 1999।
- [29] भारत सरकार, माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम, 2007।
- [30] ए. कुमारी एवं एस. झा, “बिहार में सरकारी वृद्धाश्रमों की स्थिति: एक मूल्यांकन,” प्रशासनिक परिवर्तन, खण्ड 44, अंक 1, पृ. 23-38, 2017।
- [31] के. सिंह, “वृद्धजन शोध पद्धति: भारतीय संदर्भ में चुनौतियाँ,” शोध विमर्श, खण्ड 11, अंक 2, पृ. 56-68, 2016।
- [32] एम. पटेल एवं एस. प्रिंस, “विकासशील देशों में वृद्धजन कल्याण शोध के पद्धतिगत मुद्दे,” अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन शोध पत्रिका, खण्ड 21, अंक 4, पृ. 318-332, 2001।
- [33] शोधकर्ता द्वारा संचालित क्षेत्र साक्षात्कार, पटना, गया, मुजफ्फरपुर, दरभंगा वृद्धाश्रम, जनवरी-मार्च 2018।
- [34] पी. वी. काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, खण्ड 5, भाग 2। पूना: भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, 1977।
- [35] भारत की जनगणना, बिहार: शिक्षा तालिकाएँ। नई दिल्ली: महापंजीयक कार्यालय, 2011।
- [36] पी. कुमार, “प्रवासन और पारिवारिक विघटन: ग्रामीण बिहार का अनुभव,” भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा, खण्ड 22, अंक 1, पृ. 78-94, 2018।
- [37] एन. चोपड़ा, “भारत में वृद्धजनों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति: सांस्कृतिक कारक,” मानसिक स्वास्थ्य एवं समाज, खण्ड 8, अंक 2, पृ. 45-58, 2015।
- [38] आई. पी. देसाई, भारत में संयुक्त परिवार: एक गहन अध्ययन। नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल, 1964।
- [39] ए. एम. शाह, भारतीय पारिवारिक परिवर्तन: शोध और व्याख्या। नई दिल्ली: ओरिएण्ट लॉन्गमैन, 1998।
- [40] टी. एस. एप्पेन, “केरल में वृद्धावस्था: आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक सहयोग,” आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक, खण्ड 34, अंक 44, पृ. 3123-3128, 1999।

- [41] एस. लैम्ब, भारत में वृद्ध होना: शरीर, परिवार और आत्म का अनुभव। बर्कली: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 2009।
- [42] वी. पटेल एवं अन्य, “दक्षिण एशिया में वृद्धजनों का मानसिक स्वास्थ्य,” वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य, खण्ड 13, अंक 3, पृ. 289-304, 2016।
- [43] बी. सेन एवं एस. दास, “भारत में वृद्धाश्रमों का बदलता स्वरूप: सामुदायिक देखभाल की ओर,” सामाजिक कार्य शोध, खण्ड 18, अंक 2, पृ. 112-126, 2017।
- [44] एम. चेन एवं जे. ड्रेज, “भारत में विधवाएँ: सामाजिक उपेक्षा और सार्वजनिक नीति,” आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक, खण्ड 30, अंक 36, पृ. 2435-2442, 1995।
- [45] एस. मुखर्जी, “केरल और बिहार में वृद्धजन कल्याण: तुलनात्मक अध्ययन,” भारतीय सामाजिक अनुसन्धान, खण्ड 60, अंक 2, पृ. 178-195, 2019।
- [46] डी. जमुना, “भारत में वृद्धजन: मुद्दे और चुनौतियाँ,” वृद्धजन शोध एवं अनुभव, खण्ड 3, अंक 1, पृ. 46-62, 2013।